

---

# Parama Stutih

---

## परमस्तुतिः

---

### Document Information



---

Text title : Parama Stuti

File name : paramastutiH.itx

Category : vishhnu, vAdirAja, vishnu, stuti

Location : doc\_vishhnu

Author : vAdirAjayati

Proofread by : Malati Shekar, Revathy R.

Latest update : June 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 8, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



परमस्तुतिः



मौक्तिकाङ्कुरकल्पदंष्ट्रमुखाम्बुजं प्रलयाम्बुजं  
चक्रशङ्खवराभयच्छविमत्करं सुयशस्करम् ।  
रत्नराजिविराजिवृत्तशिरोधरं धरणीधरं  
पोत्रिरूपिणमच्युतं प्रणतोऽस्मि तं सुखदस्मितम् ॥ १ ॥

अङ्कहीननिशेशविम्बसमाननं निजमाननं  
शङ्खमाल्यसुबोधपुस्तकधारिणं मधुवैरिणम् ।  
कुङ्कुमाङ्कितचन्दनोज्ज्वलकन्धरं श्रुतिमन्दिरं  
किङ्करीकृतविश्वमश्वमुखं भजत्सुखदं भजे ॥ २ ॥

नीलशैलविशालवप्रलसद्भुजान्तरसद्भुजा-  
बाल्यमानुषसक्तभूललनाश्रमघ्न जितश्रमम् ।  
मालतीमणिमञ्जुमाल्य सरोजनेत्र गुरो जने  
कोलरूप भवन्तमीश नतोऽस्मि तं सुखदस्मितम् ॥ ३ ॥

हारशोभिविशालवक्षसमीश्वरं तमनश्वरं  
वारिजातसुजातपत्रविलोचनं कृतसेचनम् ।  
शारदाम्बुदसन्निभं सकलोज्ज्वलं सुजनैर्नतम् ।  
पारवर्जितशौर्यमश्वमुखं भजत्सुखदं भजे ॥ ४ ॥

जातरूपमयाग्र्यमध्यविभूषणं भवभीषणम्  
पीतवस्त्रविषक्तसद्रशनोर्जितं मलवर्जितम् ।  
आततायिसुरारिसञ्चयभङ्गदं कनकाङ्गदं  
ख्यातसूकररूपिणं प्रणतोऽस्मि तं सुखदस्मितम् ॥ ५ ॥

पद्मरागविरागकिङ्किणिमेखलाञ्चितमेखला  
साध्य बुद्धिरियं वरोदरबन्धन स्मरतां धन ।  
त्वाद्य चिन्तयदुद्यदर्कसमाम्बरं गतडम्बरं  
तद्वराय भवन्तमश्वमुखं भजत्सुखदं भजे ॥ ६ ॥

मृद्विभेन्द्रकरोपमाङ्कगवल्लभं सुरवल्लभं  
स्निग्धजानुयुगं मनोहरजङ्घमुद्धृतजङ्गमम् ।  
पद्मशोभिपदानखीकृतनागमान्यघनागमा-  
वेद्यमद्भुतसूकरं प्रणतोऽस्मि तं सुखदस्मितम् ॥ ७ ॥

वर्तुलोरुयुगं मनोरमवृत्तजानुमवृत्तजा  
स्तुत्यकोमलपुष्टजङ्घमहीनतल्पमहीनतम् ।  
रक्तशारदचारुपद्मलसत्पदं निगमास्पदं  
दैत्यवार्धिमहौर्वश्वमुखं भजत्सुखदं भजे ॥ ८ ॥


वादिराजयतीरिता ह्यवक्रभूधरवक्रभू  
वेदवागिव पावनी परमस्तुतिर्गुणविस्तृतिः ।  
सादरं पठतां सतां हरिपादपेशलपादपे  
साधुभक्तिलतां स्थिरीकुरुतेतरामवृतेतरा ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचिता  
परमस्तुतिः सम्पूर्णा ।


भारतीयरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

Proofread by Malati Shekar

---

——  
*Parama Stutih*

pdf was typeset on June 8, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

